डॉ० संतोष कुमार
सहायक प्राचार्य
हिन्दी विभाग
भारती मंडल महाविद्यालय
रहिका (मधुबनी)

तृतीय पत्र - आधुनिक हिन्दी काव्य Date :

पाठ्य विषय :- "राम की शक्ति-पूजा" - सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
संबंधित पुस्तक :- प्रसाद निराला पन्त महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ

प्रश्न :① "राम की शक्ति-पूजा' का भाव-सौन्दर्य निरूपित करें।

या,

'राम की शक्ति-पूजा' एक महाकाव्यात्मक महत्व की कविता है। स्पष्ट करें।

या,

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता 'राम की शक्ति-पूजा' की व्याख्या अपने शब्दों में करें।

उत्तर :- 'राम की शक्तिपूजा' महाप्राण निराला द्वारा 1936 में रचित एक लम्बी कविता है, जो उनके प्रथम काव्य संग्रह 'अनामिका' में संकलित है। 312 पंक्तियों की इस कविता की कथा पौराणिक है, जिसमें निराला ने अपने समय के भारत के समस्याओं को रेखांकित किया है। जिस कारण उनकी यह कविता महाकाव्यात्मक गरिमा से लवरेज हो गई है। डॉ० रामविलास शर्मा की दृष्टि में इस कविता का वस्तु विधान प्राच्य महाकाव्यों जैसा नहीं है, पाश्चात्य महाकाव्यों जैसा है। यह 'राम की शक्तिपूजा' महाकाव्य नहीं है, खण्ड काव्य भी नहीं है। बल्कि यह तो एक लंबी कविता है। पर, कवि की इस कविता में जिस ढंग का छंदोविधान, भाषा का उद्दाम व संयमित प्रभाव है, निरंतर मूल्यों की प्रतिष्ठा है और इसमें प्रतीकों व बिम्बों का जैसा नियोजन है, यह सब मिलकर इस कविता को महाकाव्यात्मक गरिमा देते हैं। यह कविता एक प्रख्यात मिथकीय कथा (पौराणिक आख्यान) का पुनर्मूल्यांकन है परन्तु निराला ने इसे सर्वथा मौलिक रूप में प्रस्तुत करते हुए प्रासंगिक बना दिया है।

महाकाव्य की अपनी कुछ शर्तें हैं। उनमें प्रमुख हैं - आधिकालीन व प्रासंगिक कथा का नियोजन, विभिन्न वर्गीय चरित्रों का निर्धारण, चिरन्तन मूल्यों का नियोजन, लोकमंगल की सिद्धि, बिम्बों व प्रतीकों का

SHOT ON REDMI 7
AI DUAL CAMERA

Teacher's Signature :

Date :

प्रयोग आदि।

'राम की शक्तिपूजा' महाप्राण निराला के जीवन के समग्र औदात्य को अभिव्यंजित करने वाली हिन्दी साहित्य की एक महत्तम उपलब्धि है। इसमें कवि ने पौराणिक आख्यान का सहारा लेकर मर्यादा पुरुषोत्तम राम को सामान्य मानव के रूप में चित्रित कर उनके माध्यम से अपने ~~संघर्षमू~~ संघर्षपूर्ण व्यक्तित्व का तथा तत्कालीन राष्ट्रीय मानस का रूपांकन किया है। यह एक प्रबन्धात्मक रचना है जिसकी कथा अपने विकास क्रम के कई मोड़ों से गुजरती हुई नाटकीय स्पर्श प्राप्त करती है। इस कविता की संरचना ऊपर से आख्यानपरक है परन्तु आंतरिक संयोजन नाटकीय है। इस कविता में 'राम-रावण युद्ध' के उस प्रसंग का वर्णन है जिसमें शक्ति रावण के पक्ष में चली जाती हैं और राम उद्विग्न हो उठते हैं, फिर विभीषण की सलाह पर उनके द्वारा शक्ति की पूजा होती है और अंतत: शक्ति राम में समाहित हो जाती हैं। इस रचना का कथानक पाँच सोपानों से गुजरता है इसका प्रथम सोपान है राम और रावण का सूर्यास्त होने तक का अनिर्णित युद्ध। जिसके पश्चात् युद्ध के परिणाम तक नहीं पहुँचने के कारण श्रीराम उदास होकर शिविर में लौटते हैं। दूसरे सोपान में वे अंधकार में चिंतामग्न बैठे हैं; लेकिन एकाएक वे अतीत की स्मृतियों में चले जाते हैं जहाँ राजा जनक के पुष्प वाटिका में जानकी के प्रथम मिलन की सुखद अनुभूति प्राप्त होती है किन्तु शीघ्र ही वे वर्तमान में आकर शक्ति के रावण के पक्ष में चले जाने के कारण गहन वेदना में डूब जाते हैं। कथानक का तीसरा सोपान हनुमान की अंतर्कथा से जुड़ा हुआ है, जहाँ राम की वेदना से आहत हो हनुमान अपने विकराल स्वरूप का अट्टहास करते हुए विस्तार कर लेते हैं। तब पुन: शक्ति माता अंजना का रूप धर उन्हें शांत करती हैं। इसके पश्चात् चौथे सोपान में राम-विभीषण संवाद है, जहाँ शक्ति का अन्याय के पक्ष में चले जाने के पश्चात् विभीषण उनका उत्साहवर्द्धन करते हैं, साथ ही जाम्बंत राम को शक्ति की आराधना कर उन्हें अपने पक्ष में करने का सुझाव

SHOT ON REDMI 7
AI DUAL CAMERA

Teacher's Signature :

Date :

जिधर है उधर शक्ति" के जरिए भी हर युग के मनुष्य की सनातन चिन्ता को उजागर किया गया है। यह कविता अन्य पुरुष शैली में लिखी गयी है। ~~इसे~~ अख्यानपरक होने के कारण ही निराला ने 'मैं' परक शैली त्यागकर 'अन्यपुरुष' शैली में इसकी रचना की है। इस कविता में नाट्य उक्ति का भी कुशल प्रयोग है। राम युद्ध से लौटकर मंच पर आकर बैठ जाते हैं और अंत तक वहीं बैठे रहते हैं और कवि बड़ी कुशलता से स्मृतियों का सहारा लेकर पाठक को अतीत में ले जाता है। कभी चिन्ता जगाकर पाठक को वर्तमान से जोड़ देता है और कभी जीत की आशा व जानकी के उद्धार की कामना पैदा कर कविता को भविष्य में संचरणशील बना देता है। राम एक जगह बैठ लगातार मशाल रख रहे हैं लेकिन यहाँ अतीत, वर्तमान और भविष्य में कथा होड़ लगाती रहती है। लगातार दृश्यों के परिवर्तन से कविता नाटकीय विधान को आत्मसात करती है।

'राम की शक्तिपूजा' में निराला ने लोकनाट्य तकनीक का उपयोग किया है। कविता की प्रारंभिक 18 पंक्तियाँ कथावाचक की वक्तृता है। इसमें निराला कथावाचक के रूप में युद्ध का स्वयं वर्णन करते हैं।

इस प्रकार 'राम की शक्तिपूजा' ~~में~~ की कथा-वस्तु में नाटकीय कथावस्तु के अनुरूप सभी कार्यावस्थाएँ और नाट्य संधियाँ उपयुक्त स्थान और अनुपात में अनुस्यूत हैं। राम के रूप में अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण करके कवि ने उन्हें पाश्चात्य नाटकों के नायकों की परम्परा में ढाला है। जिसको ~~समर्थन~~ डॉ० रामविलास शर्मा ने स्पष्ट किया है। इस तरह इस रचना में उत्साह और अवसाद के भावों का आरोह-अवरोह नाटकीय संस्पर्श के साथ उपस्थित हुआ है जो बड़ा ही कलात्मक है।

~~निष्कर्षतः~~ 'राम की शक्ति पूजा' की भाषा शैली अद्भुत, गांभीर्य है, भाषा परिस्थिति के अनुसार कोमल और कठोर होती गयी है। भाषा-शैली की दृष्टि से प्रस्तुत कविता छायावाद युग का सबसे सफल ध्वन्यात्मक काव्य है। इस कविता का

SHOT ON REDMI 7
AI DUAL CAMERA

Teacher's Signature :

Date :

देते हैं। पाँचवें सोपान में श्रीराम द्वारा शक्ति की आराधना का वर्णन है। आठवें दिन पूजा पूर्ण होने से पूर्व दुर्गा पूजा का अंतिम पुष्प उठा के ले जाती हैं। इस घटना से राम का ~~हृदय~~ एक बार फिर निराशा के अंधेरे से घिर आती हैं। पुन: उन्हें सीता की चिन्ता सताने लगती हैं तभी उन्हें अंधेरे में रोशनी की झलक दिखाई देती है और उन्हें माँ का वचन याद आती है—

"यह है उपाय', कह उठे राम ज्यों मन्द्रित घन—
"कहती थीं माता मुझे सदा राजीव-नयन।
दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मात एक नयन।"

इस बात का भान होते ही अंतिम कमल के स्थान पर वे अपनी दाहिनी आँख अर्पित करने को उद्यत होते हैं। इसी समय, शक्ति प्रकट होकर उन्हें ऐसा करने से रोक देती है। साथ ही, विजय का वरदान देकर भगवती उनके शरीर में लीन हो जाती हैं। इस प्रकार 'राम की शक्तिपूजा' में महाकाव्य या नाटक की तरह पाँचों काव्यावस्थाएँ मिलती हैं। पात्रों की दृष्टि से भी 'राम की शक्तिपूजा' में महाकाव्यात्मक औदात्त के दर्शन होते हैं। जिसके केन्द्रिय चरित्र राम हैं। राम इस युद्ध में ~~इस युद्ध~~ इस बात से भयभीत नहीं है कि अन्यायी शक्तियाँ प्रबल है बल्कि में वे न्यायपरस्त शक्ति का अन्यायी शक्ति से हाथ मिला लेने के कारण भयभीत हैं। हर दौर का नैतिक मानस इस सनातन चोट को झेलता रहा है। जिस परिपेक्ष्य में यह लंबी कविता महाकाव्यात्मक हो जाती है।

महाकाव्य में चिरंतन मूल्यों की प्रतिष्ठा भी होती है। निराला कविता के प्रारंभ में यह संकेत देते हैं कि राम रावण का यह युद्ध शाश्वत लिए हुए है। यह सिर्फ राम-रावण के बीच का युद्ध नहीं है बल्कि रावणत्व व रामत्व के बीच का युद्ध है। हर युग के रावणत्व के खिलाफ रामत्व जूझता है और इसलिए यह कविता जितनी पौराणिक या तात्कालिक है उतनी ही सनातन है। "अन्याय

Teacher's Signature :

Date :

छंदोविधान भी महाकाव्य के अनुकूल है। वैसे तो यह पूरी कविता मुक्तछंद में कही गई है पर कवि ने भावों के अनुरूप भाषा का प्रवाह रख कर उसकी लय या गति में परिवर्तन कर उसने एक वैविध्यमूलक छंदोविधान रचा है। कवि जब युद्ध वर्णन करता है तो वहाँ संयुक्ताक्षरों की भरमार है। ये संयुक्ताक्षर युद्ध की गुत्थमगुत्थी को संकेतित करते हैं। वह जब प्रणय का चित्र खींचते है तो वहाँ भाषा का प्रवाह अत्यंत लालित्यपूर्ण है। वहाँ उसने कोशिश की है संयुक्ताक्षरों से बचने की। यह निराला की कुशलता का परिचायक है। जैसे -

"नयनों का - नयनों से गोपन - प्रिय सम्भाषण
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान पतन,"

निराला की खूबी है कि वे मात्राएँ नहीं आघात गिनते हैं। जहाँ भावावेश होता है वहाँ वे आघात भावावेश की समाप्ति पर रखते हैं। जैसे —

"सिहरा तन, क्षण भर भूला मन, लहरा समस्त,
हर धनुर्भंग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त",

इस पंक्तियों में तीन आघात है लेकिन 'हर धनुर्भंग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त' में भावावेश होने के कारण एक ही आघात है। स्थापत्य की दृष्टि से इस कविता में महाकाव्य, खण्ड काव्य और निबंध काव्य तीनों की विशेषताओं का समावेश मिलता है। निराला की यह रचना अपने नाटकीय विधान के कारण भी महाकाव्यात्मकता को धारण करती है। द्वन्द्वाश्रयी नाटकीयता की प्रधानता है। नाटक की नाटकीयता द्वन्द्व पर टिकी होती है। यह पूरी कविता द्वन्द्वों से भरी पड़ी है। साथ ही अद्भुत बिम्ब योजना, अर्थमयी छंदयोजना एवं ओजपूर्ण काव्य-भाषा इस कविता को कालजयी कीर्ति का गौरव प्रदान करती हैं।

निष्कर्षतः निराला की राम की शक्तिपूजा उनकी एक अद्वितीय काव्य-साधना का परिचायक है। यह ~~एक~~ अपने विशेषताओं के कारण आधुनिक भावबोध की प्रौढ़तम रचना है।

Teacher's Signature :